राजदेव मण्डल
जाल (पटकथा)

राजदेव मण्डल

जाल

(पटकथा)

दू शब्द-

मैथिली साहित्यमे पटकथाक अभावकेँ देखैत ऐ विषयमे अज्ञ रहितो, एकटा लघु परियास केलौं। सफल भेलौं आकि असफल, निर्णए तँ समाजे करता।

-राजदेव मण्डल

मुसहरनियाँ, पोस्ट- रतनसारा, भाया- निर्मली, जिला- मधुबनी। बिहार- ८४७४५२ मोबाइल : ९१९९५९२९२०
शिक्षा : एम.ए. द्वय (मैथिली, हिन्दी, एल.एल.बी)

पात्र परिचए- जाल

(पटकथा)

१. विक्रम- नायक

२. बरसा- नायिका

३. श्यामबाबू- बरसाक पिता

४. मनदेव- बरसाक मामा

५. रखिया- बरसाक मामी

६. हरिया- खलनायक

७. सुइदचन- खलनायकक पिता
८. मुंशी- सुइदचनक मुंशी
९. चनकी- हरियाक प्रेमिका
१०. फुलिया- चनकीक माए
११. डोलना- चनकीक पिता
१२. भकोलबा- चनकीक भाए
१३. विक्रमक माए- नायकक माए
१४. रघुआ- विक्रमक संगी
१५. टहलू- गामक एक बेकती
(दोकनदार, सिपाहीक दल, हरियाक संगी बदमाश तथा किछु ग्रामीण आ पंचगण।)

पहिल दृश्य-
समए- भोर।
स्थान- नदीक किनार।
नदीक आस-पड़ोसक दृश्य उभड़ैत अछि। सुरुज उगि रहल अछि। किनारपर गाम-घरक लोक, चारूभर पसरल हरिअरी, गाए, भैंस, बकरी सभ चरैत। गरदा आ थाल-कादोमे खेलाइत धिया-पुता। दूर-दूर धरि देखाइत अछि।
कट टू।
धारमे नाह चलि रहल अछि। जैपर चढ़ि कऽ गामक लोक शहर जाइत अछि, जरूरी चीज-बौस कीनै आ बेचैले। धारक ऐ पार गाम आ ओइ पार देखा पड़ै अछि- कौलेज, स्कूल, रेलबे टीसन, चलैत आ ठाढ़ बस। केते गोटे नाहसँ उतरि कऽ गाम दिस आबि रहल अछि। नदी आ ओइठामक जिनगीसँ सम्बन्धित गीत नवरिया गाबि रहल अछि।
कट टू।

दोसर दृश्य-
समए- भोर।
नायक- विक्रम, विक्रमक माए।
स्थान- विक्रमक घरक बाहरी भाग।
(घरक बाहर दुआरिपर गाए आ बरद बान्हल अछि। विक्रमक माए गाए दूहि रहल अछि। दूधसँ भरल बाल्टीन दुआरिक कोनपर रखैत अछि। आ बड़बड़ाइत अँगना दिस बढ़ैत अछि।
विक्रमक माए- विक्रम अखनी तक सुतले छै शाइत। की करतै छौड़ा, परेशान रहै छै। पढ़नाइक संगे घरोक काज करए पड़ै छै। (जोरसँ) हे रौ बौआऽऽऽ विक्रम बेटाऽऽ, उठ जल्दी भोर भऽ गेलौ।
कट टू।

तेसर दृश्य-
स्थान- विक्रमक घरक भीतरी भाग।

समए- दिन
पात्र- विक्रम
(विक्रम घरमे सूतल अछि। चौकीक बगलमे टेबुलपर पोथी आ कौपीक ढेरी अछि। ओइपर एकटा टेबुल घड़ीओ अछि।
माएक स्वर सुनि देहपर सँ चद्दरि हटबैत अछि। अँगैठी करैत घड़ीपर नजरि दैत अछि। घड़ी दिस देखिते फुड़फुड़ा कऽ उठैत अछि।)
विक्रम- भोर भऽ गेलै। जुलुमक गप्प! आइ घड़ीओ नै बजलै। दूध कखनि शहर पहुँचैबै? (जोरसँ) अबै छियौ माएऽऽऽ।
कटू टू।
चारम दृश्य-
स्थान- विक्रमक दुआरि।
समए- दिन।
पात्र- विक्रमक माए आ विक्रम।
विक्रमक माए एकटा बड़का कनस्तरमे दूध भरि रहल अछि। दूध भरि कऽ आँगन दिस तकैत अछि। तखने विक्रम शर्टक बटम लगबैत अँगनासँ निकलैत अछि। दुआरिक कातसँ साइकिल लाबि ओइपर दूधक वर्तन लटकबैत अछि। आगू-पाछू देखैत, घंटी टुनटुनबैत आगू बढ़ैत अछि।)
विक्रमक माए- आइ दूधो कमे भेलौ।
(साइकिलपर चढ़ि चलि पड़ैत अछि। ओकर माए पाछूसँ सोर पाड़ैत अछि।)
विक्रमक माए- विक्रमऽऽऽ। तूँ किछो बिसरबो केलही?
विक्रम- नै...। कहाँ किछो।
विक्रमक माए- मन पड़लौं?
विक्रम- हँ-हँ। ऊ वेकेन्सीबला फार्म पोस्ट ऑफिसमे रजिष्ट्री करबाक छै। मन नै परितौ तँ डेटे बित जइतै।
(माए लेटर लाबि कऽ दैत अछि आ जेबीमे रखैत विक्रमक साइकिल चलि पड़ैत अछि।)
विक्रमक माए- भुलक्कड़ भऽ गेलै। (रस्ता दिस तकिते रहि जाइत अछि।)
कट टू।
पाँचम दृश्य-
स्थान- गामक एक भाग।
समए- दिन।
पात्र- रघुआ, विक्रम।
दुआरिक चबुतरापर रघु नहा रहल अछि। कपारपर पानि ढरैत काल जोर-जोरसँ ‘राम-राम’क जाप कऽ रहल अछि। बगलसँ गुजरैत डगरपर साइकिलसँ विक्रम जा रहल अछि। रघुआक नजरि ओकरापर पड़ैत अछि।
रघुआ- यौ दरोगा भाय। कनी सुस्ता लिअ। बस एक मिनिट। हमहूँ अहींक संगे चलबै। तैयारे छी। बस धोतीक ढेका खोंसए दिअ।

विक्रम- नै रघु काका। हमरा देरी भऽ गेल अछि।
रघुआ- रौ भतीजबा। तुरत्तेमे दुनियाँ आछन भऽ जेतै। हे रौ ठाढ़ रह। हे हे ढेका खोसए दे।
(विक्रम साइकिल आगू बढ़ा लैत अछि। पाछूसँ रघुआ डाँड़मे धोती लटपटबैत रहि जाइत अछि।)
कट टू।

साइकिलक दुनू पहिया तेज गतिसँ चलि रहल अछि। ओहीपर चढ़ल आ जोर-जोरसँ निसाँस खिंचैत विक्रम देखा पड़ैत अछि। असगरेमे बड़बड़ाइत अछि।

विक्रम- बेदरामे चोर-सिपाहीक खेल खेलाइत काल-सिपाही बेसी हमरे बनए पड़ै छल। तहिएसँ सभ हमरा दरोगा कहए लगल। आब कहैत अछि तँ तामस लहरैत अछि। करबै की? आब हमरा दरोगा बनैक उपए करए पड़तै। जे होइ ऐ परीछामे पूरा जोर लगबए पड़तै।
(पाछू मुहेँ घुमि कऽ तकैत अछि। रघुआ धोती सम्हारैत दौगल आबि रहल अछि।)
रघुआ- (हाथ उठा कऽ हल्ला करैत) रे भतीजबा, ठाढ़ रह। एतेक दूरसँ दौगल अबै छियौ, आबो तँ चढ़ा कऽ नेने चल।
(विक्रम फेंर तेजीसँ साइकिल आगू बढ़ा लैत अछि।)

कट टू।

छअम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- नदीक तट्क बाहरी भाग।
पात्र- बरसा (नायिका)
नदीक काते-कात घास-फूसक बीचमे बाट देखा पड़ैत अछि। ओइ बाटपर हाथमे पोथी नेने बरसा तेजीसँ आबि रहल अछि।
कट टू।

नदीक कछेरमे नाह ठाढ़ भेल देखा पड़ैत अछि। लोक सभ नाहपर चढ़ि रहल अछि, किछु गोटे चढ़ेक प्रयासमे अछि।
कट टू।
देखा पड़ैत अछि- एक तरफ तेजीसँ साइकिलपर चढ़ल विक्रम आबि रहल अछि आ दोसर दिससँ बरसा दौगैत आबि रहल अछि।
कट टू।
(नाह खुगैले तैयार अछि। तखैने बरसा पहुँच जाइत अछि। कैएक स्त्री-पुरुख एके संग कहैत अछि।)
स्त्री-पुरुख- हौ नवरिया, कनी रूकि जाहक।
स्त्री- हाथ बढ़ाउ दाय। खैंच कऽ चढ़ा लइ छी।
बरसा- कोनो बात नै हम अपने चढ़ि जाएब।
(कहैत नाहपर चढ़ि जाइत अछि।)
(तखैने विक्रम साइकिलक घंटी बजबैत आ हल्ला करैत नाह लग पहुँच जाइत अछि। साइकिलक ब्रेक

लगबैत फानि कऽ उतरैत अछि।)
विक्रम- हे रौ भाय। हमरो चढ़ा ले। आइ अहुना हमरा लेट भऽ गेल छौ।
(साइकिलकेँ नाहपर लादैत अछि। आ चढ़ि जाइत अछि। नाह खुगि जाइत अछि।)
कट टू।
(देखा पड़ैत अछि जे विक्रमकेँ पएरसँ बरसाक पएर चिपा रहल अछि। बरसा पएर खिंचैक कोशिश कऽ रहल अछि। ताबे विक्रमक नजरि निच्चाँ पड़ैत अछि। ओ चट दनि अपन पएर हटा लैत अछि।)
विक्रम- ओह...। हड़बड़ीमे पएर पड़ि गेल। चिपा गेल की? धकम-धुक्कीमे एना भऽ जाइ छै।
(बरसा किछो नै बजैत अछि।)
बरसा- (टाँग दिस तकैत) एँह...।
(विक्रम ओकरा दिस देखैत अछि। बरसा नजरि झुका लैत अछि। विक्रम टकटकी लगा कऽ ओकरा दिस देखते रहि जाइत अछि।)
(फ्लैश बैक- दुनू सपनामे प्रेम गीत गाबि रहल अछि।)
(फ्लैश बैक समाप्त)
(विक्रम बरसाक हाथ पकड़ने ठाढ़ अछि।)
बरसा- (तामसमे) हाथ छोड़ू। दिमाग ठीक अछि की नै।
विक्रम- गल्ती भऽ गेल। हे हम जानि कऽ एना नै केलौं। लेकिन अहाँ बड़ड तमसाह छी।
(बरसा तामसमे ओकरा दिस आँखि गुड़ारि कऽ देखैत अछि। लोक सभ हल्ला-गुल्ल करैत नाहसँ उतरि रहल अछि। विक्रम ओकरा क्रोधसँ बँचबाक लेल आसमान दिस ताकए लगैत अछि।)
विक्रम- समए केते सुन्दर छै। ई बादलक टुकड़ी सभ केते रेशमे दौगल जा रहल छै। लगै छै केकरोसँ भेँट करबाक लेल हड़बड़ीमे हुअए।
कट टू।
(नाहसँ सभ उतरि गेल छै। लोक सभ दू-चारि डेग आगू बढ़ि गेल छै। असगरे विक्रम नाहपर अछि।)
नवरिया- हे यौ भाय। आसमानक तारा गिनै छी की? यौ अखनि दिन छै राति नै। झट दऽ नाहसँ उतरू। अखनि तारा नै भेटत।
विक्रम- हँ...। हैया उतरै छी। लोको केते हड़बड़ीमे छै।
(चट दऽ साइकिल उतारि आगू बढ़ैत अछि।)
कट टू।
सातम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- छोटका शहर।
(मिष्टान आ चाहक दोकान)
(दोकनदार एकटा बड़का कराहमे दूध औंट रहल अछि। ओकरा बगलमे टेबुल-बेंच लगल अछि। ओइपर बैस कऽ दूटा मोंछबला चूड़ा-दही सुड़ैक रहल अछि। तखैने विक्रम सायकिलक घंटी टुनटुनबैत पहुँचैत अछि।)
दोकदार- यौ विक्रम भाय। हमरा तँ लगै छेलए जे आइ अहाँक दरशने नै हेतै।

हे... हे... सम्हारि कऽ।
(विक्रमक सायकिल खलिया दूधक वर्तनसँ टकरा जाइत अछि।)
यौ भाय, बसन्तीकेँ लगाम नै अछि की?
विक्रम- यौ, हमरा बसन्तीकेँ नजरि नै लगाउ।
(सायकिलसँ हड़बड़ा कऽ विक्रम उतरैत अछि। दूध नापि कऽ कराहमे दैत अछि। मोंछबला तेजीसँ दही सुड़ैक रहल अछि।)
आइ जँ दूध नै आनितौं तँ चाहक दोकान केना चलैत? जँ दोसरासँ दूध लैतौं तँ हमर रोजगार मारल जाइत।
दोकानदार- हँ से तँ ठीके।
विक्रम- खेत नै उपजैत अछि तँ ई दूधक रोजगार पैदा केलौं। तहूमे अपने टाँगमे कुड़हैर मारि लेब।
(सायकिल आगू बढ़बैत अछि।)
कट टू।
आठम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- पोस्ट आँफिस।
(विक्रम पोस्ट आँफिसक काउन्टरपर लेटर दऽ रहल अछि। आँफिसक किरानी स्पीडपोस्टक मोहर लगा कऽ रसीद विक्रमकेँ हाथमे दैत अछि।)
कट टू।
स्थान- पोस्ट ऑफिसक बाहरी भाग
समए- दिन
(एक दिससँ लेटरवाँक्समे लेटर गिरा कऽ बरसा निकलैत अछि। दोसर दिससँ रसीदकेँ देखैत विक्रम अबैत अछि। दुनू एक-दोसरासँ टकरा जाइत अछि। बरसाकेँ हाथसँ पुस्तक गिर पड़ैत अछि। विक्रम पुस्तक उठेबैले झुकैत अछि। ओकरासँ पहिने तमसाइत बरसा पुस्तक उठा कऽ चलि जाइत अछि।
विक्रम- (ऊपर देखैत) हे भगवान एकरासँ रक्षा करू।
कट टू।
नअम दृश्य-
समए- राति।
स्थान- विक्रमक घर।
(घरमे लालटेनक मद्धिम इजोत। विक्रम चद्दरि ओढ़ने बारम्बार कर फेरि रहल अछि। ओकरा सपनामे बारम्बार बरसा चलि अबैत अछि। जइ कारणे ओकरा निन्न नै होइत अछि। लालटेनक इजोतकेँ कम करैत अछि आ चद्दरि तानि सुतैक परियास करैत अछि।)
कट टू।
(फलैश बैक- बरसा आ विक्रम सपनामे प्रेम-गीत गाबि रहल अछि।)

(फ्लैश बैक समाप्त।)
कट टू।
(मालक घर दिससँ मवेशी खढ़क टाटमे धक्का मारि रहल अछि। स्वर सुनि विक्रम चट दनि उठैत अछि आ लालटेनक इजोत बढ़बैत अछि। टाटक भूरसँ हुलकी मारैत अछि। खुगल बड़द देखा पड़ैत अछि। फेर लालटेनक इजोत कम करि दैत अछि। अन्हार ससरि कऽ लगमे चलि अबैत अछि।)
कट टू।
दसम दृश्य-
समए- भोर।
स्थान- नदीक किनार।
(दूरमे मंदिर आ मस्जिद देखा पड़ैत अछि। मंदिरक घंटाक स्वर। मुर्गाक अबाज। गाए, बकरी, बड़द हाँकने जाइत लोक सभ। सायकिलपर चढ़ल विक्रम जा रहल अछि।)
कट टू।
समए- दिन।
स्थान- नदीक किनार।
(विक्रम नदीक किनारपर बैसल बरसाक प्रतीक्षा कऽ रहल अछि। नाह ऐपार-सँ-ओइपार अबैत अछि, जाइत अछि। किन्तु बरसा नै अबैत अछि। मिलैले विक्रम छटपटा रहल अछि।) डिजॉल्व।
कट टू।
एगारहम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- सुइदचनक घर।
(सुइदचन आ ओकर मुंशी कुरसी-टेबुल लगा कऽ बैसल अछि। सुइदचन किछु सोचि रहल अछि, ओकरा बगलमे मुंशीजी बही-खाता उनटा-पुनटा रहल अछि।)
मुंशी- मालिक! अहाँ श्याम बाबूकेँ किए नै कहै छिऐ। ओकरापर तेतेक सुइद बढ़ि गेलै जे सभटा खेत लिखि देत तैयो नै सधतै।
सुइदचन- हमहूँ तँ सहए सोचि रहल छी।
मुंशी- गामक धिया-पुताकेँ टीसन पढ़बै छै। एनए खेती नै उपजै छै। की हेतै। सुनै छी जे बेटीकेँ पढ़ा रहल छै। आमदनी अठन्नी आ खरचा रूपैआ।
सुइदचन- बस नै वएह बेबस हेतै। हम नै तँ हमर बेटा बेबस कऽ देतै। करजा सधबैमे देरी हेतै तब ने खेत-पथार आ गहना-जेवर देइले बेबस हेतै।
मुंशी- जँ अगिला सालक फसल नीक हेतै तँ बेचि कऽ चुकता कऽ देत। तब?
सुइदचन- समैपर खाद-पानि भेटबे नै करतै तँ उपजा नीक केना कऽ हेतै। हमर जाल केतेक दूर धरि पसरल छै। अहाँ तँ बुझिते छी। बैंको समैपर टका नै देतै।
(दुनूकेँ आँखि मिलैत अछि आ दुनू हँसए लगैत अछि।)
कट टू।

बारहम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- नदीक कछेर।
(विक्रम ओतए प्रतीक्षा करैत रहैत अछि। जेतए बरसासँ मिलबाक संभावना रहैत अछि। ऐ क्रममे आइ सुनहट बाधमे ठाढ़ अछि। तखैने बरसाकेँ चिचियाइत सुनैत अछि। विक्रम दौग कऽ ओतए पहुँचैत अछि तँ देखैए जे तीन-चारिटा बदमाश बरसाकेँ घिसियबैत नेने जा रहल अछि। बरसा ओकरा सभसँ छुटबाक परियास कऽ रहल अछि। विक्रम ओइ दृश्यकेँ देखिते चिचिया लगैत अछि।)
विक्रम- हे रौ, ओकरा छोड़ि देबही की देखबीही।
बदमाश- ई केतएसँ आबि गेलौ रौ। मार सारकेँ।
(बदमाश आ विक्रमक बीच झगड़ा शुरू भऽ जाइत अछि। हल्ला-गुल्ला सुनि खेतमे काज करैत जन-मजूर सभ हँसुआ आ लाठी लऽ कऽ दौगैत अछि। लोकक संख्या देखि कऽ बदमाश सभ भागि जाइत अछि। विक्रमक संगे बरसा घर दिस विदा भऽ जाइत अछि।)
कट टू।

तेहरहम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- विक्रमक घर।
(डेढ़ियापर ठाढ़ भऽ कऽ टहलू हल्ला करैत अछि।)
टहलू- (चकोना होइत) केकरो नै देखै छिऐ। अँगनामे कियो छी कि नै यौ?
विक्रमक माए- (अँगनासँ हुलकी दैत) टहलू बौआ छी। अँगना चलि आउ। बहुत दिनक बाद देखलौं।
टहलू- हँ, हम तँ टहलैते रहै छी। से आइ टहैलते काल बड़ड अजगुत देखलौं।
विक्रमक माए- की देखलिऐ?
टहलू- देखलौं, अहाँक बेटा गुण्डा बदमाश सभसँ लड़ैत छल। सेहो एकटा लड़की लेल।
विक्रमक माए- (आश्चर्यसँ) आँए...!
टहलू- झूठ छिऐ की साँच। अपना बेटेसँ पूछि लेबै। हम जाइ छी।
(विदा होइत अछि।)
कट टू।
पनरहम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- विक्रमक घर।
(विक्रमक माए अँगना बहारि रहल अछि। विक्रम अँगना पहुँचिते माएसँ कहैत अछि।)
विक्रम- आइ कनी बेसी देरी भऽ गेलौ माए।
विक्रमक माए- राह-बाटमे गुण्डा-अवारासँ झगड़ा करबीही तँ देरी लगतौ ने। खाइक लेल अन्नक जोगाड़ नै छौ। जिनगी केना सुधरतौ तइले सोचबें आकि हीरो बनल घुमै छँ।
विक्रम- हमरो गप्प सुनबीही तब ने माए।

विक्रमक माए- सुनबै की। उ सभ बड़का खुनियाँ छिऐ। ओकरासँ झगड़बें तँ जिनगी बेरवाद कऽ देतौ। केते गोटेकेँ मारि कऽ धारमे भँसा देने छै।
विक्रम- माए, तोहीं तँ कहने रही जे केकरोपर अतियाचार होइत रहै तँ चुप नै रहबाक चाही। एकटा लड़कीकेँ संगे उ सभ जबरदस्ती करै छेलै तँ हम चुप भऽ कऽ देखैत रहितौं। से तोरा नीक लगितौ?
(विक्रमक माए सोचमे डुमि जाइत अछि।)
विक्रमक माए- नीक तँ नै लगितए। मुदा ओ सभ पैसाबला लोक छै। पुलिस आ कानून ओकरा मुट्ठीमे छै। ओकरासँ के लड़तै?
विक्रम- हम लड़बै माए हम। हम अपने बनबै पुलिसबला। सभकेँ सोझ कऽ देबै। रस्तापर लबैले चाहे जे करए पड़ए।
कट टू।
सोलहम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- सुइदचनक घर।
सुइदचन- मुंशीजी, सुनै छी, किरपलबाक बेटा कहै छल जे हम करजा आपस नै करबै।
मुंशी- उ कहै छै जे हमरापर बेसी सुइद जोड़ि देने छी।
सुइदचन- तेकर मतलब, हमरा बेइमान बनबए चाहै छै।
मुंशी- एना करतै तँ देखा-देखी समाजक आनो लोक...।
सुइदचन- केकरा समाजमे हिम्मत छै जे हमरासँ टकरा जाएत। हरियाकेँ कहि दियौ किरपलबा बेटाकेँ चारि सटका लगा देतै। ओकर लबरपनी बन्न भऽ जेतै। आ नै सुधरतै तँ राफ-साफ। (हाथसँ इशारा करैत अछि।)
कट टू।
सतरहम दृश्य-
समए- दिन। स्थान- श्यामबाबूक घर।
(बरसा चुप्पी साधने बैसल अछि। श्यामबाबू गहींर नजरिसँ बेटी दिस देखि रहल अछि।)
श्यामबाबू- बरसा, तोरा किछो होइ छौ, आकि कोइ किछु कहलकौ?
(बरसा किछु ने बजैत अछि।)
श्यामबाबू- तोहर माए तँ बचपनेमे मरि गेलौ। केकरा कहबीही। किछु बात छै तँ हमरे कहए पड़तौ।
(बरसाक आँखिसँ दहो-बहो नोर खसए लगैत अछि।)
श्यामबाबू- की भेलौ तोरा? बजबीही तब ने।
(बरसा आँखि पोछैत अछि।)
बरसा- पढ़ि कऽ अबैकाल बाधमे गुण्डा छौड़ा सभ घेर नेने छल। घिसिया कऽ नेने जाइत छल। खेतसँ जन सभ आ ओ दौगल, नै तँ...।
(फेर कानए लगैत अछि।)
श्यामबाबू- तब तँ केते गोटेक बुझने हेतै। चिन्हने हेतै। आइ हम ओकरा बापसँ भेँट करा देबै।

(तमसा कऽ चलि पड़ैत अछि।)
बरसा- (पाछूसँ हल्ला करैत अछि।) बाबूजीऽऽऽ
कट टू।
अठारहम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- गामक डगर।
(श्यामबाबू जा रहल अछि। आगूसँ अबैत सुइदचन ओकरा टोकै छै।)
सुइदचन- यौ श्यामबाबू, उदास छी। की बात? किछु भेल की?
श्यामबाबू- की कहब। आ केना कहब?
सुइदचन- हम तँ अहाँक हित छी। हमरा लग नै बाजब तँ फेर...।
श्यामबाबू- हमर बेटी पढ़ि कऽ अबैत रहए से बाटमे...।
(श्यामबाबू नजदीक आबि कानमे सुइदचनकेँ सभटा गप कहैत अछि।)
सुइदचन- ई गप दोसरठाम नै बजब। ऐसँ अहींक इज्जत उघार हएत। बुझलौं किने।
श्यामबाबू- तब एकर निदान केना हेतै?
सुइदचन- धुर। तेकर चिन्ता नै करू। अइले तँ हमर बेटा हरिया काफी छै। फोनसँ सभ गप कहि दइ छिऐ। अहाँ जाउ।
(सुइदचन फोनसँ गप करए लगैत अछि। श्यामबाबू चलि पड़ैत अछि।)
कट टू।
उन्नैसम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- नदीक किनार।
(घोड़सवार तेजीसँ आबि रहल अछि। ओकर फोनक घंटी बजैत अछि। एकाएक घोड़ा रोकैक परियास करैत अछि। गतिक कारणे घोड़ा नचैत अँइठ कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। फोनपर गप करैत-करैत ओ फ्लैश बैकमे चलि जाइत अछि।)
कट टू।
दृश्य परिवर्तन फ्लैश बैक
स्थान- सड़क
समए दिन।
(श्यामबाबू अपना बेटीक संगे शहरसँ आपस आबि रहल अछि। बजारसँ कीनल वस्तु सभ हाथमे लटकौने अछि। आगूमे हरियाकेँ देखि ठाढ़ होइत अछि। हरियो ठाढ़ भऽ जाइत अछि।)
श्यामबाबू- की यौ बौआ, अहाँक बाबूजी कुशल छथि ने?
हरिया- हँ-हँ ठीके छथि। (हरियाक नजरि बरसापर पड़ैत अछि। बरसा नजरि झुका कऽ आगू बढ़ि जाइत अछि।)
श्यामबाबू- अच्छा-अच्छा, परसू अबै छी तँ भेँट करबनि।

(कहैत चलि पड़ैत अछि।)
कट टू।
फ्लैश बैक समाप्त।
दृश्य परिवर्तन।
हरिया- चिन्ह गेलौं, वएह लड़की छी।
(हरिया फोन जीबीमे रखैत अछि। सिरकँ झटकैत अछि आ तेजीसँ घोड़ाकँ आगू बढ़ा दैत अछि।)
कट टू।
बीसम दृश्य-
समए- राति। स्थान- निर्जन।
(हरिया अपना संगी बदमाश लग पहुँचैत अछि। बदमाश सभ आपसमे फुसराहटि करए लगैत अछि।)
हरिया- हे रौ, तूँ सभ आइ कोनो लड़कीकँ घेरने रही।
(सभ चुप्पी साधि लैत अछि।) बजै छी किए नै रौ। हमर तामस नै देखने छी। साँच बज नै तँ कान-कपार ढाहि देबौ।
बदमाश एक- हजूर, अहाँ तामसकँ रोकू। अहाँ बिनु पुछने ई गलती भऽ गेल।
हरिया- हँ-हँ बाज ने। की गलती?
(बदमाश एक लगमे आबि कानमे सभटा बात कहैत अछि।)
बदमाश दू- हजूर, आगूक लेल आदेश दियौ।
हरिया- ओइ लड़कीक संग दोबारा गलत बेवहार नै हेबाक चाही। ओ लड़की अपने जातिक अछि। ओकरा बापक संगे हमरा पिताजीक पुरान सम्बन्ध छै।
मुड़ी डोलबैत) हँ एकटा बातक पता लगा जे ओइ लड़कीक संगे लड़का के छेलै।
(हरिया तेजीसँ प्रस्थान करैत अछि।)
कट टू।
एकैसम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- श्यामबाबूक घर।
(श्यामबाबू अपना दुआरिपर बैसल छथि। हरिया पहुँचैत अछि।)
श्यमाबाबू- आऊ बौआ, कहू महाजनक समाचार? ठीक छथि ने?
हरिया- हँ-हँ ठीके छथि।
श्यामबाबू- बरसा बेटीऽऽऽ।
बरसा- (भीतरसँ बजैत अछि।) हँ, बाबूजी।
श्यामबाबू- चाह नेने अबिहेँ।
हरिया- हमरा बाबूजी भेजने छथि।
श्यामबाबू- हँ-हँ कहू की बात?
हरिया- वएह, करजाक सम्बन्धमे। अहाँसँ भेँट करए चाहै छथि।

श्यामबाबू- देखियौ ने, धिया-पुता सभकेँ पढ़बै छी। ओहो सभ रूपैआ नै देने अछि। सभटा असूल कऽ नेने अबै छी। आ भेँटो हेतै।
(श्यामबाबू आँगन दिस जाइ छथि ताबत बरसा चाह नेने आबि जाइत अछि।)
हरिया- एकटक बरसा दिस ताकि रहल अछि। बरसा नजरि झुकौने चाह हरिया दिस बढ़बैत अछि। हरिया चाहक कप तेना कऽ पकड़ैत अछि जे चाह हरा जाइत अछि। तखैने श्यामबाबू पुन: आपस आबि जाइ छथि। बरसा तमसा कऽ आँगन चलि जाइत अछि।)
कट टू।

बाइसम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- निर्जन बाट।
(बरसा लोकक नजरिसँ नुकाइत जा रहल अछि। हरियाकेँ नजरि ओकरापर चल जाइत अछि। किन्तु बरसाकेँ ऐ बातक पता नै चलैत अछि। हरिया चोरा कऽ ओकरा पाछू-पाछू जा रहल अछि।)
कट टू।
दृश्य परिवर्तन-
समए- साँझ।
स्थान- बाध।
(बरसाकेँ ओतए पहुँचिते विक्रम खेतसँ निकलैत अछि।)
विक्रम- अहाँ, बहुत काल धरि प्रतिक्षा करबौलौं।
बरसा- की करबै। लोक तँ तकिते रहै छै। कहुना नुकाइत-छिपाइत एलौं।
विक्रम- ऐठाम रस्ता छै। चलू नदीक कछेरपर। निधोख भऽ कऽ गप करब।
(दुनू गोटे चलि पड़ैत अछि।)
कट टू।
दृश्य परिवर्तन-
दुनू एक-दोसराक हाथ पकड़ने खुशीक गीत गाबि रहल अछि। झोंझमे छिपल हरिया देखि रहल अछि।)
कट टू।

तइसम दृश्य-
समए- साँझ।
स्थान- निर्जन।
(हरियाक मुँहपर घृणाक भाव अछि। दारूक बोतल मुँहसँ लगबैत अछि। फेर जोरसँ फेक दैत अछि।)
हरिया- (क्रोधमे) सार, हीरोपनी करैत अछि। हमरा सोझहामे। हमरा चिन्हने नै अछि। जातिक लड़कीक संगे...। आइए तोरा मुइलहा बापसँ भेँट करा देबौ।
(बोतलकेँ टाँगसँ ठोकर मारैत अछि आ तेजीसँ घोड़ापर चढ़ि चलि दैत अछि।)
कट टू।

चौबीसम दृश्य-
समए- साँझ।
स्थान- विक्रमक घर।
(विक्रमक माए घर-अँगनाक काज कऽ रहल अछि। हरिया अपना तीन-चाारि साथीक संगे पहुँचैत अछि। घोड़सवार सभकेँ देखिते बुढ़िया भ्यभीत भऽ जाइत अछि।)
हरिया- गे बुढ़ियाऽऽऽऽ। तोहर बेटा बिकरमा कहाँ छौ?
विक्रमक माए- हौ बाबू। हमरा नै बूझल अछि। की भेलै से?
हरिया- साँपकेँ पोसने छी आ पुछै छी की भेलै। निकाल अँगनासँ आइ हड्डी तोड़ि देबौ सारकेँ।
विक्रमक माए- यौ बाबू मुँह सम्हारि कऽ गप करू हमर बेटा पढ़ै छै। कोनो लुच्चा-लोफर नै अछि।
हरिया- लोफर नै छौ तँ छौड़ीक संगे रसलीला किए केने घुरै छौ।
विक्रमक माए- हमरा बेटापर झूठ-मूठक दोख नै लगाउ। नै तँ ठीक नै हएत।
हरिया- (कोड़ा देखबैत) देखै छीही कोड़ा। हरामजादी पीठ परहक खाल खींच लेबौ। नै तँ बेटाकेँ सम्हारि ले। (हरियाक एकटा संगी अँगनासँ ताकि कऽ बहार निकलैत अछि।)
संगी- अँगनामे नै छै बिकरमा।
हरिया- सुनि ले बुढ़िया। बेटा जँ रस्तापर नै एतौ तँ काटि कऽ धारमे भँसा देबौ।
(घोड़ापर चढ़ि सभ तीव्र गतिसँ चलि पड़ैत अछि।)

पचीसम दृश्य-
स्थान- सुइदचनक घर।
(हरिया शराब पी रहल अछि। सुइदचन आ मुंशी जीकेँ अबैत देखि बोतल फेंक कऽ चलि पड़ैए।)
सुइदचन- मुंशीजी, हरिया किएक तमसाएल छै? गाँजाक बिजनीशमे घाटा लगलै की?
मुंशी- नै बुझलिऐ मालिक। श्यामबाबूक बेटी छै ने बरसा। ओकरा अपन हरीबाबू पसिन कऽ लेलकै। ओकरेसँ बिआह करबाक मन बना लेने छै।
सुइदचन- वाह। काबिल अछि। असलमे बेटा तँ हमरे छिऐ। पैघ हाथ मारलक। सोचै छेलौं ओकर जमीन करजा तरमे लिखेबै। आब तँ दहेजेमे सभटा आबि जेतै।
मुंशी- से तँ श्यामबाबूकेँ सन्तानक नामपर वएह बेटी मात्र छै। किन्तु...।
सुइदचन- दिक्कत की छै जे किन्तु लगौने छी?
मुंशी- मालिक! एकटा पढ़ुआ छौड़ा छै बिकरमा। सुनै छी जे ओइ लड़कीसँ मेल-जोल छै। देरी करबै तँ हाथसँ सब कुछौ निकलि जाएत।
सुइदचन- मुंशीजी। हमरा जालसँ निकलनाइ एते असान छै की। चलू अखने देखै छिऐ।
(दुनू चलि पड़ैत अछि।)
कट टू।

छबीसम दृश्य-
स्थान- श्यामबाबूक घर।

समए- दिन।
(श्यामबाबू, सुइदचन आ मुंशीक संगे बैसल अछि।)
सुइदचन- अहीं कहू श्यामजी, जे ओइ दिनसँ अहाँ बेटी दिस कोनो गुण्डा-बदमाश तकबो करैए?
श्यामबाबू- से तँ अहीं सबहक छत्र-छायामे ने हमरा सभ सुरक्षित छी।
सुइदचन- धियानसँ सुनि लिअ। अहां बेटीकेँ हम अपन पुतोहु मानि लेने छी। आ हम बुझिते छी जे अहाँ हमरा गप्पकेँ सहर्ष स्वीकार करबे करब।
श्यामबाबू- कनी बेटीसँ...।
(सुइदचन चुप रहबाक इशारा करैत अछि।)
सुइदचन- अहाँ चुप रहू। अहांपर करजो ततँ बहुत भऽ गेल छै। सभटा खेत बिका जाएत, तैयो नै सठत।
मुंशी- मालिक अहाँ कथी बजै छी। आब तँ हिनक खेत-पथार बेटीए-जमाएक हेतै।
सुइदचन- से तँ हम बुझिते छी। हम तँ ई कहैले एलौं, जे कोइ हमरा पुतोहु दिस अधला नजरिसँ तकतै तँ हम ओकर आँखि फोड़ि देबै। बुझलौं। चलू मुंशीजी।
(सुइदचन, मुंशी चलि पड़ैत अछि।)

कट टू।

सत्ताइसम दृश्य-
समए- दिन।
स्थान- श्यामबाबूक घर।
(श्यामबाबू बैसल अछि। बरसा ठाढ़ अछि।)
श्यामबाबू- (तमसाइत) ओइ टोलक विक्रमक संग एतेक मेल-जोल किएक रखने छी? तोरा पता छौ- लोक सभ केहेन-केहेन अफवाह उड़ा रहल छै।
बरसा- (मुड़ी गोंतने) बाबूजी ओ नीक लोक छै। ओइ दिन ओकरे कारणे हमर इज्जत आ जान बँचल।
श्यामबाबू- तूँ भ्रममे छँ। सभ सुइदचन बाबूक कृपा छेलै।
बरसा- तखनि तँ वएह मारिओ खा कऽ हमरा बँचौलक। समैपर आन लोक सोझहा कहाँ आएल।
श्यामबाबू- मुँह लगल नै बाज। ऊ लड़िका हमरा जातिओ-बेरादरीक तँ नै छी। आ एने तोरा बिआहक सभ गप्प तँइ-तसफिया भऽ गेल छौ।
(बरसा तमसा कऽ जा रहल अछि।)
सुनि ले, आब तूँ घर-अँगनासँ बाहर नै निकलि सकै छँ।
(झटकि कऽ विदा भऽ जाइए बरसा।)
कट टू।
अट्ठाइसम दृश्य-
स्थान- विक्रमक घर।
समए- दिन।
(विक्रमक माए घाड़ खसौने बैसल अछि। विक्रम प्रसन्न मुद्रामे पहुँचैत अछि।)

विक्रम- माए, तूँ कथीक चिन्तामे डुमल छेँ?
विक्रमक माए- हमर चिन्ता बुझै नै छीही। सोचै छी जे तोरा नोकरी भेट जाउ तँ हमरो जिनगी सुफल भऽ जाएत।
विक्रम- आइसँ तोहर चिन्ता खतम। (लेटर देखबैत) लेटर भेटि गेल छै। आइ सौझुका गाड़ीसँ हम जा रहल छियौ। सभ किछो सैंति कऽ झोरामे दऽ दही।
विक्रमम माए- अँए...। ठीके...। (अचरजक भाव)
कट टू।

उनतीसम दृश्य-
समए- साँझ।
स्थान- सड़क।
(विक्रम टीसन दिस बढ़ल जा रहल अछि। विचारमे डुमल अछि। आगूमे रघुआकेँ देखि बजैत अछि।)
विक्रम- (स्वत:) बरसाकेँ सभ गप्पक जानकारी दऽ देबाक चाही। (रघुआकेँ रोकैत अछि) यौ रघुजी, कनी रूकि जाउ। एगो हमर चिट्ठी नेने जाउ।
रघुआ- (रूकि कऽ) की यौ दरोगाजी, बनियेँ गलिऐ अहाँ दरोगा। अच्छा जाउ, जाउ आ लाउ केकरा देबाक छै चिट्ठी?
विक्रम- हे लिअ। कोइ बुझहए नै। चुपेचाप बरसाकेँ हाथमे दऽ देबै।
रघुआ- अहाँ निचेन रहू। कोइ नै बुझतै। मुदा घूस दिअ पड़त।
(दुनू हँसैत अछि।)
कट टू।

तीसम दृश्य-
समए- साँझ।
स्थान- श्यामबाबूक घर।
(आस-पड़ोसक औरतिया सभ अँगनामे जमा अछि। बिआहसँ पूर्वक विध-बेवहार भऽ रहल अछि। पुरुख सभ बरियातीक प्रतिक्षा कऽ रहल अछि। रघुआ कोनटा लगसँ बरसाकेँ इशारा करैत अछि। बरसाकेँ लगमे पहुँचिते चिट्ठी ओकरा हाथमे पकड़ा दैत अछि।)
कट टू।

एकतीसम दृश्य-
(विक्रम ट्रेनपर चढ़ैत अछि। आ गाड़ी खुगि जाइत अछि। चलैत गाड़ीक पाछूमे बरसा दौग रहल अछि। बरसाक पाछूसँ एकटा घोड़ सवार रेबाड़ने जा रहल अछि।)
कट टू।

बत्तीसम दृश्य-
समए- राति।
स्थान- श्यामबाबूक घर।

(श्यामबाबू उदास भऽ बैसल छथि। घरक समान सभ अस्त-बेस्त अछि। एकटा घोड़ सवार अबैत अछि। श्यामबाबू मुड़ी उठा कऽ ओकरा दिस तकै छथि।)

श्यामबाबू- हमरा बेटीक कोनो पता लगल?

घोड़ सवार- टीशनक चारूभर आ दूर-दूर धरि तकलौं, पता नै, गाड़ीपर चढ़ि गेल आकि केनौ नुका रहल, अन्हारमे। मुदा चिन्ता नै करू। हमर संगी सभ ताकिए रहल अछि। जेतै केतए।)

(घोड़ सवार चलि दैत अछि।)

कट टू।

तैंतीसम दृश्य-

समए- भोर।

स्थान- श्यामबाबूक घर।

(श्यामबाबू स्नानक उपरान्त सुरूजकेँ नमस्कार करै छथि।)

श्यामबाबू- (सुरूज दिस तकैत) हे सुरूज महराज! पता नै, दोख हमर अछि आकि हमरा बेटीक। केतए हेतै आ केहेन हालमे हेतै। हम ओकर बाप छिऐ। चिन्ता तँ हमरे हेतै। समाज तँ हँसि रहल छै। आइ ओकर माए रहितै तँ ई दशा नै होइतै। पता नै, बापकेँ जे करबाक चाही से हम करि रहल छी आकि नै। हे सुरूज महराज, ओकर रक्षा करब। ओह...।

(आँखिमे नोर भरि जाइ छै।)

कट टू।

चौंतीसम दृश्य-

समए- दिन।

स्थान- सुइदचनक घर।

(सुइदचन आ मुंशीजी बैसल अछि।)

मुंशीजी- मालिक! केतेक दिन बीति गेल। मुदा अखनी तक श्यामक बेटीक कोनो पता नै लगल। लगै छल-जे छुच्छे फैदा हएत लेकिन...।

सुइदचन- लेकिन की लगबै छी। सुइदखोरकेँ कहियो घाटा लगै छै। हमर बेटा कच्चा खेलाड़ी नै छै। लड़की केतौ नुकाएल हेतै ओ खोजि कऽ निकालि लेतै। फेर हम जे चाहबै सएह हेतै।

कट टू।

पैंतीसम दृश्य-

समए- दिन।

(हरिया अपना कोठलीमे दारू पीब रहल अछि। बोतल खाली कऽ झुमैत-झामैत बाहर निकलैत अछि। आ घोड़ापर चढ़ि चलि दैत अछि।)

कट टू।

छत्तीसम दृश्य-

स्थान- बाधक निर्जन भाग।

समए- दिन।
(हरिया घोड़ापर सँ उतरैत अछि। कातक गाछ तरमे ओकर प्रेमिका फुलिया ठाढ़ अछि। दुनूक बीच प्रेमसँ भीजल गप-सप्प् होइत अछि, दुनूमे प्रेमालाप।)
फुलिया- एकटा गप्प तँ अहाँकेँ नै कहलौं।
हरिया- कोन गप्प?
फुलिया- हम तँ अहाँ बच्चाक माए बनैवाली छी।
हरिया- धुर, ऐ झंझटकेँ हटाउ। खसा लिअ।
फुलिया- एना कहीं होइ छै। अहाँ बाप बनैबला छी। (पेट दिस इशारा करैत) ई अहींक बच्चा छी।
हरिया- एनामे तँ हम केतेक धिया-पुताक बाप बनि जेबै, आ केतेक लड़कीक पति।
फुलिया- तेकर मतलब...।
हरिया- (क्रोधमे) मतलब किछो नै। गर्भपात करबा लिअ। खरच हम देबै।
फुलिया- हम से नै करब।
हरिया- (क्रोधमे) केतौ किछो बजबैं वा हमरा लग एबही तँ परान खैंचि लेबौ। तोरा हमरा बीच सभ बात खतम। (घोडापर चढ़ि सक्रोध प्रस्थान।)
कट टू।

सैंतीसम दृश्य-

समए- दिन।
स्थान- फुलियाक घर।

(फुलियाक माए चनकी अपना धिया-पुतका खाएक परैस रहली अछि। धिया-पुता भात मंगैत अछि।)

चनकी- (करछुल थारीमे पटकैत) ले, थारीओ बरतन खा ले।
(तखैने फुलियाक बाप डोलना निशाँमे झुमैत पहुँचैत अछि।)

डोलना- फुलियाक माएऽऽऽ। एको लवनीक दाम लाबह। कंठ सुखा गेल। हे तोरा नीक नै हेतह। एको चुरूक दाम निकालह।
(चनकी पैसा राखएबला गुल्लककेँ फोड़ैत अछि, आ सभटा पैसा तामसे छिड़िया दैत अछि।)

चनकी- ले सभटा पैसा ले। नै होइ छौ तँ धियो-पुताकेँ रकत पी ले।
(तामसे चनकी धिया-पुताकेँ थोपराबए लगैत अछि। तखैने फुलिया पहुँचैए आ कोनमे बैस कऽ कानए लगैए।)

चनकी- तोरा की भेलौ गइ?

फुलिया- माए गइ माए, तोहर इज्जत...।
(कानए लगैए)

चनकी- हमरा इज्जतकेँ की भेलै गइ?

फुलिया- सुइदखोरबाक बेटा इज्जत खराप कऽ देलकौ गइ। हमरा पेटमे ओकर...।
(कानए लगैत अछि।)

चनकी- हमर इज्जत खराप करत अनजनुआ जनमल ओकरा तँ हम...।

फुलिया- कहने रहै जे बिआह करबो, तोरा संगे।

चनकी- ओइ कोंढ़िफुट्टाकेँ बिआह करए पड़तै। चल देखै छिऐ केना नै बिआह करतै ऊ। नै करतै तँ सौंसे समाजमे ढोल पीट देबै। कारिख-चुन लगा देबै। घिना कऽ रखि देबै- आइ। सभ गोरे चल। कहि दही सभकेँ।
(एके संग सभ चलि दैत अछि।)

कट टू।

अरतीसम दृश्य-

समए- दिन।
स्थान- सुइदचनक घर।

(सुइदचन आ मुंशी दलानपर बैसल अछि। एक हेंज लोक अबैत अछि। ओइमे फुलिया ओकर माए-बाप आ ओइ टोलक आनो-आन लोक सभ अछि। सभ तामसे गारि-बात दऽ रहल अछि, मुंशी पुछै छै।)

मुंशी- की बात छिऐ? अहाँ सभ केकरा गरिया रहल छिऐ?

सुइदचन- सार सभ निशाँ पीने अछि। बताह भऽ गेल छै सभटा। पता छौ जे केकरा दुआर पर छी।

मुंशीजी- हे रौ भाग जो तोरा सभ। तमसेतौ तँ मालिक गोली मारि देतौ।
(फुलियाक माए चनकी करिया खापड़ि नेने आगू अबैत अछि।)

चनकी- देखै छी खापड़ि। माएक दूध पीने छी तँ सामनेमे चलि आ। आइ चानि ठोकि देबौ।

सुइदचन- रे सोर पार तँ खलीफाकेँ। ला लाठी, चुतर तोड़ि देबै।
(लाठी हाथमे लेने आगू बढ़ैत अछि। चनकी खापड़ि फेकैत अछि। सुइदचनक कपारपर खापड़ि लगैत अछि अछि फूटि जाइत अछि। कपार पकड़ि बैस जाइत अछि।)

मुंशीजी- मालिक जान बँचाउ।

सुइदचन- रे बहींचो, कोनेसँ बजर खसलौ रे।

मुंशी- सुइदबला छी।

चनकी- (गरजैत) घरढुक्काक बाप। असली बजर तँ आब गिरतौ। कहाँ छौ बेटा? करा बिआह।

सुइदचन- बिआह? हमरासँ?

मुंशीजी- मालिक! अहासँ नै। अहाँक बेटासँ बिआह करौत।
(भीड़मे श्यामबाबू ठाढ़ भऽ कऽ सभ किछु देखि सुनि रहल अछि।)

सुइदचन- की बात भेलै रौ?
(एक गोटे आगू बढ़ि सभ गप्प सुइदचनक कानमे कहैत अछि। माथापर चोट मारैत श्यामबू प्रस्थान करैत अछि। किछु लोक हल्ला केनिहारकेँ शान्त कऽ रहल अछि।)

कट टू।